INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED & MULTILINGUAL STUDIES

UGC Approved Research Journal (Sr. 47674)

Volume V
Issue II

ISSN : 2394-207X (Print)
IMPACT FACTOR : 4.205

February 2018

A Galaxy of Scholarly Written Research Papers/Articles

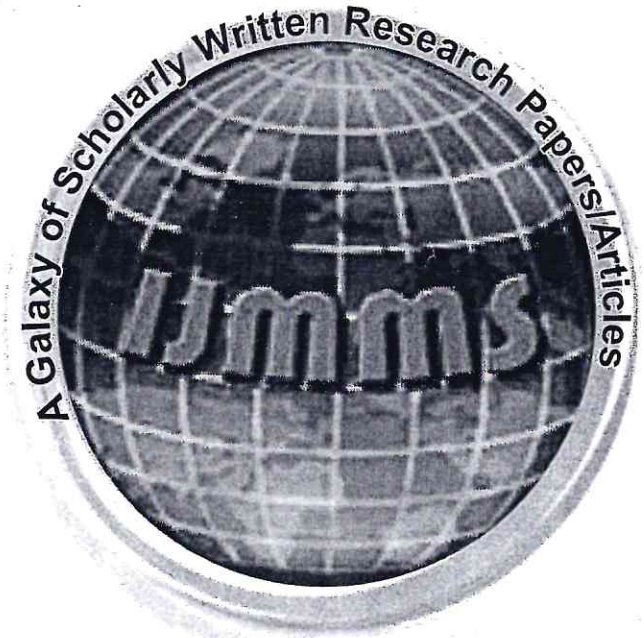

IJMMS

Cosmos

Chief Editor
Dr. V. H. Mane

Executive Editor
Prof. M. P. Shaikh

www.ijmms.in | Email : ijmms14@gmail.com

35	CULTURAL CONFLICT IN KIRAN DESAI'S *"THE INHERITANCE OF LOSS"*	Prof. Pranjali B. Vidyasagar	144-147
36	Literary Theory in Practice: A Case of Arun Kolatkar's Jejuri in light of Intentional Fallacy	Parag Prakash Chaudhari	148-151
37	Impact of ICT on College Libraries	Mr. Sumedh S.Gajbe	152-154
38	महाराष्ट्रातील कृषी विकास आणि पिकरचनेतील बदलत्या प्रवृत्ती	प्रा. डॉ. सोमनाथ वसंतराव पाटील	155-158
39	हरितगृह शेती तंत्राचे अर्थशास्त्र	प्रविण भाऊसाहेब विखे [१] प्रा. डॉ. एस. जी. शिंदे [२]	159-162
40	ग्रामीण विकासात स्थानिक स्वराज्य संस्थांची भूमिका (महाराष्ट्राचा विशेष संदर्भ)	प्रा .डॉ .बोरावके के .एस्.	163-165
41	विविध कार्यकारी सेवा सहकारी पत संस्थांचे ग्रामीण विकासातील योगदान (विशेष संदर्भ :कर्जत तालुका, सन १९९९—०० ते २००८—०९)	प्रा.डॉ.सचिन रमेश तोरडमल	166-168
42	भारतातील टोमॅटो उत्पादन व विपणन विषयक समस्या व उपाययोजना	प्रा. साहेबराव दौलत निकम	169-171
43	कृषि व ग्रामिण विकासात नाबार्डची भुमिका	प्रा.वासनीकर शामराव लक्ष्मण	172-173
44	महाराष्ट्रातील शेती: सद्यस्थिती, समस्या आणि आव्हाने	प्रा. डॉ.हनुमंत पोपट शिंदे	174-180
45	मानव अधिकार आणि भारतीय शेतकऱ्यांची सद्यस्थिती	प्रा.डॉ.अंकुश दादाराव काळे	181-184
46	भौगोलिक घटकांचा महाराष्ट्रातील शेतीच्या शाश्वतीकरणावर होणा-या परिणामांचा अभ्यास	प्रा.डॉ. रविंद्र सुदाम भगत	185-188
47	हिंदी कथा साहित्य में समाज एवं संस्कृति	डॉ. बेबी कोलते	189-191
48	समकालीन हिंदी कहानी में चित्रित नारी जीवन	प्रा. नानासाहेब जावळे	192-195
49	फणीश्वरनाथ 'रेणु' की कहानियों में ग्रामीण समाज एवं संस्कृति	डॉ. मनोहर जमदाडे	196-198
50	'हिंदी कथा साहित्य में समाज एवं संस्कृति' (मोहनदास नैमिशराय कृत'महाशुद्र'के संदर्भ में)	डॉ. वंदना तुकाराम काटे	199-201
51	हिंदी आलोचना का विकास एवं स्त्री विमर्श	प्रा.डॉ. भगत सारिका	202-203
52	आलोचना उद्भव और विकास	प्रा.नामदेव शितोळे	204-207
53	साहित्य एवं आलोचना : पुनर्विचार की आवश्यकता	डॉ. राजेन्द्र खैरनार	208-211
54	Agriculture Planning of Gondia District in Maharashtra State	[1]Dr. Devendra K. Bisen [2]Prof.Hanumant Dattatraya Shinde	212-214

VOLUME-V (II) Impact Factor: 4.205 ISSN (Print): 2394-207X
INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIFACETED AND MULTILINGUAL STUDIES

हिंदी आलोचना का विकास एवं स्त्री विमर्श

प्रा.डॉ. भगत सारिका
श्री पद्ममणि जैन कला वाणिज्य महाविद्यालय, पाबळ, तह. शिरूर, जिला–पुणे

हिंदी आलोचना का आंधुनिक रूप वर्तमानकाल में प्रचलित हुआ किन्तु इससे भी पूर्व हिंदी साहित्य में आलोचना की एक परम्परा प्रचलित थी जिसका सीधा संबंध संस्कृत काव्य आलोचना से है। संस्कृत साहित्य में सैध्दान्तिक आलोचना का विकास बहुत पहले हो चुका था जिसे काव्यशास्त्र या नाट्यशास्त्र के नाम से भी अभिहित किया जा सकता है। भारतेन्दु युग हिन्दी आलोचना का उद्‌भव काल हैं। आधुनिक हिन्दी साहित्य के अन्य अंगों के समान उन्होंने आलोचना के विकास में भी महत्त्वपूर्ण योग दिया है। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के समान इनका 'नाटक' नामक ग्रंथ नाट्यशास्त्र संबंधी सैध्दान्तिक आलोचना का ग्रन्थ है । रीतिकाल में सैध्दान्तिक और व्यवहारिक दोनों रूपों में आलोचना मिलती है। भक्तिकाल में 'सूर सूर तुलसी ससी' जैसा आलोचना का रूप मिलता है। केशवदास की कविप्रिया और रसिकप्रिया सैध्दान्तिक समीक्षा तथा बिहारी सतसई की टीकाओं में व्यवहारिक आलोचना देखी जा सकती है ।

भारतेन्दु कालीन आलोचना तत्कालीन पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाश में आई। आलोचना का सूत्रपात करनेवाले इन पत्रों में कवि वचन सुधा, हरिशचन्द्र मैगजीन, हिन्दी प्रदीप प्रमुख है। सरस्वती के सम्पादक आचार्य महावीर प्रसाद व्दिवेदी ने आलोचना को एक नई दिशा प्रदान की। उनकी आलोचना में भारतीय रस सिध्दांत का समर्थन तो है ही साथ ही नवीनता का भी समर्थन है। व्दिवेदी युग में मिश्र बन्धुओं ने हिन्दी नवरत्न तथा मिश्रबन्धु विनोद की रचना की। इन रचनाकारों द्‌वारा हिन्दी में पहली बार ऐतिहासिक और सैध्दान्तिक आलोचना का रूप सामने आया। मिश्रबन्धुओं ने हिन्दी नवरत्न में देव को बिहारी से श्रेष्ठ माना है । इससे प्रेरणा पाकर व्दिवेदी युग में तुलनात्मक आलोचना का जन्म हुआ। आचार्य रामचन्द्र शुल्क हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ आलोचक माने जाते हैं। इससे पूर्व आलोचना का कोई आदर्श स्थापित नहीं था। आचार्य शुल्क एक सुनिश्चित मानदंड और एक विकसित आलोचना पध्दति लेकर अवतरित हुए। व्दिवेदी युगीन आलोचना की त्रुटियों को दूर करते हुए शुक्लजी ने आलोचना पध्दति को पूर्ण बनाया। आचार्य शुक्ल के समकालीन आलोचकों में डॉ. शामसुन्दर दास, पदुमलाल, पन्नालाल बख्शी, गिरिदत्त शुक्ल कृष्णशंकर शुक्ल आदि का नाम उल्लेखनीय है ।

आधुनिक युग में विविध समीक्षा पद्धति का विकास हुआ है। जिसमें शिवदान सिंह चौहान, रामविलास शर्मा, प्रकाशचन्द्र गुप्त, अमृतराय, यशपाल आदि मार्क्सवादी आलोचक है। इलाचन्द्र जोशी तथा अज्ञेय ने मनोविश्लेषणात्मक आलोचनाएँ प्रस्तुत की है । आधुनिक समीक्षाओं में डॉ. इन्द्रनाथ मदान, डॉ. रमेशकुंतल मेघ, लक्ष्मी कान्त वर्मा, रामस्वरुप चतुर्वेदी, जगदीशचन्द्र माथूर आदि का नाम महत्त्वपूर्ण है ।

बीसवीं शताब्दी के सातवें दशक के पश्चात हिंदी आलोचना में ठहराव – सा आ गया था। साहित्य का संबंध समाज से होता है। लेकिन आलोचना में सामाजिक सरोकारों का अभाव पाया जाने लगा। ऐसे वक्त में रामविलास शर्मा और नामवर सिंह की परंपरा को कुंवरपाल सिंह तथा मैनेजर पांडेय ने विकसित करने का प्रयास किया। परंतु टेक्स्ट को लेकर 'वाह–वाह' शैली अथवा बिल्कुल नकार की भंगिमा का बोलबाल रहा और आलोचना में शास्त्रीय पध्दति हावी होती गई । आज भी साहित्य की विविध विधाओं की साहित्यिक संरचना के आधारपर ही आलोचना हो रही हैं । इससे आलोचना का क्षेत्र सीमित होता है। ऐसी स्थिति में हिंदी के प्रखर आलोचक वीरेंद्र यादव की किताब 'उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता' नई उम्मीद जगाती है। आलोचना की घिसी – पिटी परिपाटियों से वीरेंद्र यादव ने उपन्यास को बाहर निकाला है, टेक्स्ट से झांकती अनंत संभावनाओं और सामर्थ्यों की ओर इशारा किया है ।

साहित्य के बिना समाज और समाज के बिना साहित्य की कल्पना असंभव है। समाज एक सामूहिक इकाई है। और साहित्य भी बहुत सारी इकाईयों से मिलकर बनता हैं। यह तथ्य सृजन के हर क्षेत्र में लागू होता है । स्त्री के प्रश्न जीवन के केंद्रीय प्रश्न है। साहित्य में महिला लेखन के रूप में उपलब्ध विभिन्न कहानियों,

SHRI PADMAMANI JAIN COLLEGE Pabal Tal.Shirur, Dist.Pune.

कविताओं तथा आत्मकथाओं में स्त्री पीड़ा का वास्तविक रूप प्रतिबिंबित हो रहा है । परंतू स्त्री साहित्य के सवालों के मूल्यांकन के संदर्भ में हिंदी आलोचना में उपेक्षापूर्ण रवैया दिखाई देता है ।

हिंदी साहित्य विधाओं में स्त्री रचनाकारों की संख्या संतोष जनक है। वह कविता, कहानी, उपन्यास, आत्मकथा जीवनी आदि में तो प्रचुर मात्रा में कार्य कर रही है । हिंदी में रोहिणी अग्रवाल, निर्मला जैन, राजी सेठ यह रचनाकार के साथ आलोचक भी है । आलोचना के क्षेत्र में जब हम हिंदी पिट्टी की स्त्री आलोचकों पर बात करते हैं । तो एक शून्य स्थिति दिखाई देती है ।
वीरेंद्र यादव ने 'नारी का उपन्यास बनाम उपन्यास की नारी' में महिला उपन्यासकारों के लेखन में निहित नारी अस्मिता के विभिन्न धरातलों की खोज की है। साथ ही भारतीय समाज में स्त्री प्रश्न को भी गीतांजलि श्री अलका सरावगी, अनामिका, मैत्रेयी पुष्पा तथा मधू कांकरिया के उपन्यासों के माध्यम से उपस्थित किया है। नारी विमर्श की बारकियों को भी विरेंद्र यादव ने प्रस्तुत किया है ।
आलोचना करना एक कला की कसौटी है । जिसपर साहित्य का ढॉचा जॉचा परखा जाता है। आलोचना साहित्य के सौंदर्य को और अधिक निखारती है । आलोचना की यह परम्परा मनुष्य को सीखने पर नहीं अपितु जीवन निर्माण करने की प्रकिया स्वरूप प्राप्त हुई हैं ।
आज आलोचना के उन सर्वसम्मत प्रतिमानों के निर्धारण की आवयश्यकता है । जिसमें हिन्दी समीक्षा का स्वस्थ विकास हो सके और आलोचक अपने सही दायित्व को महसूस करे ।
आलोचना के मानदंड समय, परिस्थिति के अनुसार बदलते रहे हैं। आधुनिक काल में सामाजिक यथार्थ और अभिव्यक्ति आलोचना का केंद्र बनी। दृष्टि, विषय, अभिव्यक्ति में बदलाव आया सौंदर्य के प्रतिमान बदले। कविता छंदों के बंधन से मुक्त हुई कथा के नायकों में सौंदर्य के बजाय नायक के संघर्ष में सौंदर्य दिखाई देने लगा । उसी प्रकार आलोचना के मानदंड भी बदल रहे हैं ।
भक्तिकालीन संत कवि कबीरदास ने निंदक को नियरे रखने की बात कही है, इससे पता चलता है कि व्यक्तित्व में निखार लाने के लिए रचना में निखार के लिए आलोचना का बहुत महत्त्व है ।

PRINCIPAL
Shri Padmamani Jain
Arts & Commerce College
Pabal,Tal.Shirur,Dist.Pune.412403

SHRI PADMAMANI JAIN COLLEGE ★ Pabal Tal.Shirur, Dist.Pune.